B.A Part 1- Subsidiary & Hons. Pol. Sc.

व्यवहारवाद या व्यवहारवादी उपागम
Behaviouralism

Introduction:- आधुनिक राजनीतिशास्त्र का प्रारम्भिक दौर व्यवहार वादी क्रांति के साथ होता है Political behaviouralism का अध्ययन आधुनिक समय की एक महत्वपूर्ण देन है जो किसी भी निर्णय के पीछे मानवीय व्यवहार का अध्ययन करता है। यह परंपरागत उपलब्धियों के प्रति असंतोष व्यक्त करता है। व्यवहारवादी आन्दोलन ने राजनीतिशास्त्र के सिद्धांतों, अध्ययन-पद्धतियों तथा दृष्टिकोणों को मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा मनोविज्ञान के बहुत निकट कर दिया है। व्यवहारवाद राजनीतिशास्त्र को विज्ञान का स्तर दिलाने का एक प्रयास है। वैज्ञानिक परिशुद्धता, प्रेक्षण सत्यापन, परीक्षण-परिमाणन तथा प्राक्कल्पना व्यवहारवाद के मुख्य आधार हैं। व्यवहारवादी ऐसे सामान्य सिद्धांतों का प्रतिपादन करना चाहते हैं जो जिवन की वास्तविक घटनाओं पर आधारित हो तथा जिनका उपयोग आनेवाली राजनीतिक समस्याओं के अध्ययन में किया जा सके। व्यवहारवाद की यह मान्यता है कि Social Science की अवधारणाएं एंव सिद्धांत प्राकृतिक विज्ञानों की तरह हो सकते हैं। राजनीति विज्ञान पर प्राकृतिक विज्ञानों के प्रभाव को ही क्रांति कहा जाता है। आज की व्यवहारवादी क्रांति ने समाज शास्त्र, समाज मनोविज्ञान, मानवजाति-मनोविज्ञान, सांख्यकी इत्यादि की उपलब्धियों आदि पद्धति को अपनाकर इसे Inter-disciplinary अंतरानुशासनात्मक बना दिया है

व्यवहारवाद का अर्थ एंव व्याख्या - व्यवहारवाद यद्यपि 20वीं शताब्दी का बहुचर्चित विषय है तथापि इस शब्द को परिभाषित करना एक कठिन कार्य है। व्यवहारवाद व्यक्ति का अध्ययन है, उसकी उत्पत्ति तथा अंत का नहीं यह व्यक्ति का अध्ययन है। व्यवहारवादियों का यह तर्क है कि हम व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करें तो किसी भी राजनीतिक समस्या का सही समाधान निकाल सकते हैं जोसेफ इनर (Joseph Dunner) ने अपनी पुस्तक Dictionary of Political Science में व्यवहारवाद को परिभाषित करते हुए कहा है कि "यह (व्यवहारवाद) सामाजिक घटना का पूर्वाभिमुखिकरण है जो मुख्य रूप से अनुभववाद, तार्किक प्रत्यक्षवाद और अनुशासनिक स्वार्थों से संबंध रहता है।

इस प्रकार व्यवहारवाद से यह स्पष्ट है कि विभिन्न संस्थाओं और कार्यालयों के व्यवहारों का अध्ययन कर इसके द्वारा सही निष्कर्ष निकाला जा सकता है। व्यवहारवादी विचारधारा राजनीति

Scanned with Cam

में मानव के आचरण का अध्ययन प्राप्त आँकड़ों के आधार पर करना चाहती है। चूँकि प्रजातंत्रात्मक आचरण ही आधुनिक राजनीतिशास्त्र का प्रमुख विषय है इसलिए प्रजातंत्र में आँकड़ों को प्राप्त करना आज आवश्यक हो गया है आज की अध्ययन पद्धति में (Facts) तथ्यों मूल्यों (values) में विभेद किया जाता है और तथ्यगत न्याय (Factual judgement) को ही वास्तविक तथा सत्य समझा जाता है। ग्राहम वॉलास तथा बेंटले के विचारों से व्यवहारवाद काफि प्रभावित हुआ है। इन विद्वानों ने मानवीय आचरण के अध्ययन के लिए मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का सहारा लिया। इनलोगों ने अंतरानुशासनात्मक उपागम (Inter-disciplinary approach) पर अधिक बल दिया है तथा अपनी अध्ययन प्रणाली में परिमाणात्मक पद्धति (quantitative method) का सहारा लेकर राजनीतिक प्रश्नों का उत्तर गुणात्मक अर्थ (qualitative terms) में देने का प्रयास किया है।

इस प्रकार व्यवहारवादी उपागम परंपरागत विधार्थियों द्वारा छोड़े हुए क्षेत्र का अध्ययन कर इनकी संपुष्टि करता है। राजनीतिशास्त्र में व्यवहारवादी सिद्धांत के अन्तर्गत हम विधायकों, मतदाताओं, श्रमिक-वर्गों तथा न्यायधीशों के आचरण का अध्ययन करते हैं ये किस प्रकार निर्णय लेते हैं और राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन करते हैं इसका सही समाधान व्यवहारवाद ही कर सकता है।

व्यवहारवादी पद्धति जीवन के पहलुओं से अधिक संबद्ध है राजनीति में कानूनी संस्थाएँ किस ढंग से कार्य करती हैं तथा Non political institutions की क्या भूमिका है विभिन्न राजनीतिक दलों, प्रभावि pressure groups और जनमत इन्हीं का क्या प्रतिक्रियाएँ हैं — इन तमाम बातों का अध्ययन व्यवहारवादी दर्शन में ही हो सकता है। इसके अध्ययन के क्षेत्र के अन्तर्गत अराजनीतिक संस्थाओं जैसे — श्रमिक संघ, जातीय संगठन, विचारधारा (ideology) मनोवेग (Attitude) आदि का समावेश हो जाता है। बेंटले का कहना है कि व्यवहारवाद में How of things) से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। व्यवहारवाद के अन्तर्गत हम छोटे-छोटे शहरों का भी अध्ययन करते हैं। छोटे-छोटे समुदायों की क्या भूमिका है — यह व्यवहारवाद के अध्ययन का मुख्य विषय है जिसे हम अध्ययन कर व्यवहारवाद का अर्थ समझ सकते हैं

Scanned with Cam

:3:

व्यवहारवाद की उत्पत्ती के कारण

1. परंपरागत राजनीतिशास्त्र में जीवन की वास्तविक घटनाओं का सही और वैज्ञानिक चित्रण नही – परंपरागत राजनीतिशास्त्र की अध्ययन पद्धतियों के निराशापूर्ण परिणामों को व्यवहारवाद के उदय का पहला कारण कहा जाता है, क्योंकि परंपरागत राजनीतिशास्त्र की अध्ययन पद्धतियों में जिवन की वास्तविकताओं का न्यायपूर्ण एंव सुस्पष्ट चित्र हमारे सामने नही रखा गया है। साथही दिन प्रतिदिन अध्ययन के नए तरिको का प्रयोग हो रहा था, इसलिए राजनीतिशास्त्र के Student पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। अतएव राजनीतिशास्त्र का ध्यान इन नवीन अध्ययन-पद्धतियों की ओर आकर्षित हुआ।

2. जे० डब्लू० वाटसन तथा अन्य विद्वानों का योगदान – व्यवहारिकता शब्द का प्रयोग सबसे पहले J. W. Watson ने किया इसके द्वारा उसने मानव-व्यवहार की शारीरिक एंव मौलिक व्यवस्था प्रस्तुत की। बाद में फ्रायड, पैरोटो, मोस्का, मैक्स वेबर, माइकेलस तथा अन्य विद्वानों के विचारों का प्रभाव व्यवहारवादी आंदोलन पर पड़ा।

3. अनुभववादी परंपरा का योगदान – आधुनिक व्यवहारवाद का जन्म और विकास अनुभववाद में हुआ। राजनीतिशास्त्र के अन्तर्गत अनुभववाद काफि पुराना है जिसका प्रमुख संस्थापक जॉन लॉक है अनुभववादी प्रभाव के अन्तर्गत ही राजनीतिशास्त्र में व्यवहारवादी दृष्टिकोण की शुरूआत का श्रेय कॉर्ल मार्क्स, मैक्स वेबर आदि विद्वानों को है।

4. ग्राहम वॉलास और बेंटले ने अपनी पुस्तक Human nature in politics में राजनीति के अध्ययन के लिए मनोवैज्ञानिक पद्धति को अपनाने का सुझाव दिया है

5. अन्य जनतंत्रीय देशों का प्रभाव – आज विश्व के अधिकांश देशों के राजनीतिशास्त्री व्यवहारवादी आन्दोलन से प्रभावित है America में यूरोपीय छात्रों का आगमन व्यवहारवाद के उदय का एक अन्य कारण है इन छात्रो ने समाजशास्त्रीय विधियों द्वारा राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन प्रारम्भ किया। भारत में भी परंपरागत राजनीतिशास्त्र का स्थान व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान ले रहा है Indian Council of Social Scientific Research का इसमें महान योगदान हुआ है ब्रिटेन भी आज व्यवहारवादी प्रभाव की चपेट मे आ गया है संक्षेप में जिस तरह मानव जिवन में व्यवहारवाद का भी असर दिखने को मिलता है

Scanned with Cam

6. द्वितीय विश्व युद्ध का योगदान - 2nd world war ने भी व्यवहारवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। इस युद्ध ने राजनीति शास्त्रियों का ध्यान परंपरागत सिद्धांतों को हटा कर राजनीतिक जीवन की वास्तविकताओं के बिच लाकर खड़ा कर दिया। युद्धकालीन घटनाओं ने इस बात की संपुष्टि नहीं, व्यवहार का अर्थ उन संस्थाओं में कार्य करने वाले व्यक्तियों के व्यवहार से है और इसी से राजनीतिक समस्याओं की जानकारी हो सकती है

7. ऐतिहासिक जड़े - यदि हम राजनीतिक विश्लेषण के इतिहास का अध्ययन करे तो व्यवहारवाद की जड़ें ऐतिहासिक पृष्ठों में मिलेगी राजनीतिक चिंतन का इतिहास यूनानियों से प्रारम्भ होता है। सुकरात ने इस बात पर भी बल दिया कि व्यक्ति के समूहों, समुदायों तथा उनके विभिन्न प्रकार के अध्ययन जो व्यवहार से संबंधित करना चाहिए, सुकरात के बाद प्लेटो और उसके बाद उनके शिष्य आरस्तू ने भी मानव संबंधी सामान्यीकरणों, सैद्धांतिक कार्य व्यवहार संबंधी कार्य प्रारम्भ किया। संत ऑगस्टीन ने सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवहार के ऐसे सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जिनके आधार पर चर्च ने अपने को सर्वोच्च विधि-निर्मात्री संस्था सिद्ध किया। पोप तथा राजा के संघर्ष की समाप्ति के बाद मैकियावेली ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इसके बाद हॉब्स ने मानव-व्यवहार के मनोवैज्ञानिक तथ्यों के विश्लेषणों के आधार पर अनुबंध सिद्धांत का प्रतिपादन कर राज्य के शक्तियों का समर्थन करने का प्रयास किया है। इसके बाद लॉक ने इस सिद्धांत के विकास में सहयोग दिया और फिर रूसो ने मानव-व्यवहार को नियंत्रित एवं संचालित करने वाले तत्वों का विवेचन किया है

व्यवहारवाद की विशेषताएँ - व्यवहारवाद केवल मनुष्य की बाह्य राजनीतिक क्रियाओं का ही अध्ययन नहीं करता, बल्कि उसके राजनीतिक विश्वासों, मूल्यों एवं लक्ष्यों का भी अध्ययन करता है। ई० एम० - किर्कपैट्रिक ने व्यवहारवाद की चार विशेषताओं की चर्चा की है जो निम्न है। (1) व्यक्ति के व्यवहार के विश्लेषण का मौलिक इकाई के रूप में अध्ययन, व्यवहारवाद राजनीतिक संस्थाओं के आधार व स्थान पर व्यक्ति के व्यवहार के विश्लेषण को एक मौलिक इकाई के रूप में स्वीकार कर उसका अध्ययन करता है।

(2) अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ राजनीतिक विज्ञान की एकता - व्यवहारवाद राजनीति विज्ञान की अन्य समाजिक विज्ञानों जैसे- समाजशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान, मानवशास्त्र इत्यादि के साथ एकता पर बल देता है

Scanned with Cam

(iii) तथ्यों के पर्यवेक्षण, वर्गीकरण एवं मापन में परिशुद्ध प्रविधियों का प्रयोग - व्यवहारवाद इसके प्रयोग पर बल देता है।

(iv) राजनीति शास्त्र के लक्ष्य का एक व्यवस्थित आनुभविक सिद्धांत के रूप में समर्थन - व्यवहारवाद की अन्य विशेषता यह है कि यह राजनीति विज्ञान के लक्ष्य को एक व्यवस्थित आनुभविक सिद्धांत के रूप में परिभाषित करता है।

व्यवहारवाद का उद्देश्य - व्यवहारवाद अपने अध्ययन में आगमनात्मक पद्धति (Inductive method) का सहारा लेती है और इसी के माध्यम से 'क्या, कहाँ, कैसे और कब' की खोज करता है। व्यवहारवाद के प्रमुख उद्देश्य राजनीतिशास्त्र की अवधारणाओं, पद्धतियों और सिद्धांतों को प्राकृतिक विज्ञानों के स्तर पर लाने का प्रयास करना है। व्यवहारवादी राजनीतिशास्त्र को एक अनुभवात्मक विज्ञान (empirical science) बनाने का प्रयास करते हैं डेविड ईस्टन के व्यवहारवाद की पूर्वमान्यताओं और लक्ष्यों को बौद्धिक आधार शिलाएँ कहा है व्यवहारवाद की पूर्वमान्यताओं और लक्ष्यों को उन्होंने निम्नलिखित रूप में रखा है। (i) नियमितताएँ Regularities (ii) सत्यापन (iii) प्रविधियाँ- Techniques (iv) परिमाणीकरण - Quantification (v) मूल्य - values (vi) क्रमबद्धीकरण Systematisation (vii) विशुद्ध विज्ञान pure science (viii) एकीकरण Integration

व्यवहारवाद की प्रविधियाँ Techniques of Behaviouralism - व्यवहारवाद अपने निष्कर्ष, तथ्य, और आकड़ों के लिए अपनी अध्ययन-पद्धति में निम्नलिखित तरीके अपनाता है -

(i) व्यवहारिक नमूने का प्रतिनिधित्व Representation of practical Sampling

(ii) साक्षात्कार - Interview

(iii) प्रश्नावली - Questionaire

(iv) मापन प्रविधियाँ - Techniques of measurement और

(v) मापदण्ड के सहारे मनोवृत्ति का अध्ययन - Study of attitude through the use of scale

अतएव व्यवहारवाद अपने अध्ययन-क्रम में उपर्युक्त साधनों को प्रयोग कर सही निष्कर्षों पर पहुँचने का प्रयास करता है यही कारण है कि आज व्यवहारवाद एक पूर्ण विकसित अध्ययन-पद्धति के रूप में हमारे सामने उपस्थित हुआ है।

Scanned with Cam

व्यवहारवाद की आलोचनाएँ Criticisms

यह बात सही है कि व्यवहारवादी आन्दोलन ने राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन लाया है, फिर भी आज व्यवहारवादी मान्यताओं का खंडन प्रारम्भ हो गया है। डेविड ईस्टन ने तो उत्तर व्यवहारवादी क्रांति की उद्घोषणा कर दी है। व्यवहारवाद की आलोचनाएँ निम्नलिखित आधारों पर की जा रही है

(1) मूल्यों के संबंध में गलत धारणा –

(2) संगतता (Relevance) से संबंध मान्यताओं का अभाव

(3) धार्मिक कट्टरपंथी (4) मानव व्यवहार के विज्ञान का अभाव

(5) एक अपूर्ण अध्ययन (6) आराम कुर्सी वाले बुद्धिजीवी

(7) असंतोषप्रद आंकड़े (8) ग्रामीणों तथा अशिक्षितों में आत्मविश्वास का अभाव (9) सेक्स, परिवार नियोजन आदि में असफल

(10) स्वभाव से रूढ़िवादी (11) कठिन शब्दावली

Conclusion के रूप में हम कह सकते हैं कि व्यवहारवाद-संबंधी उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद राजनीति विज्ञान में व्यवहारवाद के महत्व में कोई कमी नहीं आई है। यद्यपि यह 20वीं सदी की देन है, लेकिन इसकी जड़े पुराने इतिहास से सम्बद्ध है आज के वैज्ञानिक युग में व्यवहारवाद न केवल एक महत्वपूर्ण अध्ययन-शाखा के रूप में हमारे सामने उपस्थित है, वरना राजनीति विज्ञान के स्वरूप को बदलने में इसने बड़ा योगदान भी किया है। व्यवहारवाद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डेविड ईस्टन ने ठिक ही कहा है "व्यवहारवाद संपूर्ण मानव विज्ञानों में विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक सिद्धांत के प्रारंभ का सूचक है। समाज के विभिन्न परिवर्तनशील अवबोधक उपागमों की एक लम्बी पंक्ति मे यह एक नूतन विकास है" यह मतदाताओं, शासकवर्गों, विधायकों का ही अध्ययन नहीं करता, वरन अन्य अराजनीतिक संस्थाओं, जैसे - जातीय संगठन, श्रमिक संघ तथा अन्य छोटे-छोटे शहरों तथा संप्रदायों का भी अध्ययन करता है।